10th सामाजिक विज्ञान

MUST DO SYLLABUS

इतिहास

Ch 1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

1804 की नागरिक संहिता:-

(i) जन्म के आधार पर प्राप्त विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया।
(ii) कानून के सामने सभी बराबर थे।
(iii) संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया गया।
(iv) सामंती व्यवस्था को समाप्त किया गया।
(v) किसानों के सारे टैक्स समाप्त कर दिए।
(vi) शहरों में कारीगरों की श्रेणीं-संघो के नियंत्रण को हटा दिया गया।
(vii) यातायात और संचार व्यवस्थाओं में सुधार किया गया।
(viii) आर्थिक सुधार करने के उद्देश्य से बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की गई।
(ix) समान कर प्रणाली लागू की गई।
(x) देशभक्तों को सम्मानित किया गया।

वियना संधि:- सन् 1815 के वियना सम्मेलन की मेज़बानी ड्यूक मैटरनिख ने की। ड्यूक मैटरनिटी आस्ट्रिया का चांसलर था। 1815 ई० में ब्रिटेन, रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया ने मिलकर नैपोलियन को हरा दिया था।इन चारों देशों के प्रतिनिधि आस्ट्रिया की राजधनी वियना में एक संधिपत्र तैयार किया। इस संधि में नैपोलियन द्वारा किए गए सुधारों में बदलाव किया गया जो निम्नलिखित थे। -

(1) इस संधि द्वारा फ्रांस के राजवंश बूर्बो (Bourbon) को दोबारा सत्ता पर बैठाया गया जिसे नैपोलियन ने हटा दिया था।
(2) फ्रांस से वो सारे इलाके छीन लिए जिन पर कभी नैपोलियन ने अधिकार किया था।
(3) फ्रांस अपनी सीमाओं का विस्तार न कर सके इसके लिए उसकी सीमाओं पर छोटे छोटे राज्य स्थापित कर दिए गए।
(4) प्रशा को उसकी पश्चिमी सीमा के इलाके दिए गए जबकि आस्ट्रिया को उत्तरी इटली का नियंत्रण सौंपा गया।
(5) पूर्व में रूस को पोलैंड का एक भाग सौंपा गया।
(6) उन राज्यों का निर्माण कर दिया कर जिनको नैपोलियन ने बर्खास्त किया था।

इटली के एकीकरण:- इटली अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। इनमें सबसे शक्तिशाली सार्डीनिया का राज्य था। इसका प्रधानमंत्री कैवूर (Cavour) था। इटली में अनेक क्रान्तिकारी विद्रोह हुए जिनके फलस्वरूप वहाँ कुछ राजनीतिक सुधार हुए। परन्तु इटली की वास्तविक सफलता का श्रेय कैवूर को जाता है। कैवूर ने 1859 ई० में ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध करके लोम्बार्डी पर अधिकार कर लिया और उसे सार्डीनिया में मिला लिया। इसके बाद 1860 ई० में टस्कनी, माडोना, पार्मा और उत्तर में स्थित पोप के राज्य अपने आप सार्डीनिया के साथ आ मिले। लगभग इसी समय (1860 ई० में ही) गैरीबाल्डी के प्रयासों से सिसली तथा नेपल्स के राज्य भी सार्डीनिया के साथ सम्मिलित हो गए। 1866 ई० में ऑस्ट्रिया-प्रशिया युद्ध में विस्मार्क का साथ देने पर वेनेशिया का प्रदेश सार्डीनिया को मिल गया। 1870 ई० फ्रांस-प्रशिया के युद्ध के समय फ्रांस द्वारा रोम खाली किए जाने पर सार्डीनिया ने रोम पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार इटली राष्ट्र का निर्माण हुआ परन्तु इटली में एकीकरण के बाद राजतन्त्र की स्थापना हुई क्योंकि अभी वहाँ इसी की आवश्यकता अनुभव की गई। गई।

ब्रिटेन (Britain) के एकीकरण:- इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ब्रिटेन में राष्ट्रवाद के विकास का इतिहास बाकी यूरोप से भिन्न था।

(1) ब्रिटेन में राष्ट्र राज्य का निर्माण यूरोप के अन्य राष्ट्रों की तरह किसी क्रांति के कारण नहीं हुआ।
(2) यह एक लंबी प्रक्रिया थी जिसमें राष्ट्रवाद की भावना विकसित हुई।
(3) अठाहरवी सदी से पूर्व ब्रिटेन कोई राष्ट्र नहीं था। बल्कि अनेक नृजातीय समुह थे जिनकी अपनी सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विरासत थी।
(4) इनमें मुख्य समुह अंग्रेज, वेल्श, स्कॉट या आयरिश थे।
(5) कुछ समय बाद आंग्ल राष्ट्र अपनी धन-दौलत और सत्ता के बल पर अन्य द्वीप समूहों पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया।
(6) धीरे-धीरे अंग्रेजों ने अन्य समुहों की सांस्कृतिक परंपराओं को समाप्त कर दिया और ग्रेट ब्रिटेन राष्ट्र का निर्माण हुआ जिसके अपने प्रतीक चिन्ह, ब्रिटेनी झंडा और राष्ट्र गान थे।

Ch 2:भारत में राष्ट्रवाद

प्रथम विश्व युद्ध और भारतीयों पर उसका आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव :-

(1) ब्रिटिश सरकार ने युद्ध पर किए गए खर्चों की भरपाई के लिए करों में वृद्धि कर दी।
(2) सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया और आयकर शुरू किया गया।
(3) युद्ध के दौरान कीमतें दोगुना हो गई जिससे मुश्किलें बढ़ गई।
(4) गांवों में सिपाहियों की जबरन भर्ती की गई जिससे लोगों में आक्रोश फैल गया था।
(5) 1918-19 और 1920-21 में देश के बहुत से हिस्सों में फसल खराब हो गई जिससे अनाज की कमी हो गई।

रॉलट एक्ट

(1) अपने तीनों आंदोलनों की कामयाबी से उत्साहित गाँधीजी ने 1919 में रॉलट एक्ट के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का फैसला किया क्योंकि इस कानून को बहुत ही जल्दबाजी में पारित किया गया था।
(2) इस कानून के जरिए सभी राजनीतिक गतिविधियों पर रोक लगा दी गई।
(3) राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमा चलाए 2 वर्ष तक जेल में रखा जा सकता था।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड

(1) 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ।
(2) उस दिन अमृतसर में बहुत सारे गाँव वाले सालाना वैसाखी मेले में शिरकत करने के लिए जलियाँवाला बाग मैदान में जमा हुए थे। काफी लोग तो सरकार द्वारा लागू किए गए दमनकारी कानून का विरोध प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए।
(3) यह मैदान चारों तरफ़ से बंद था।
(4) शहर से बाहर होने के कारण वहाँ जुटे लोगों को यह पता नहीं था कि इलाके में मार्शल लॉ लागू किया जा चुका है।
(5) जनरल डायर हथियारबंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और जाते ही उसने मैदान से बाहर निकलने के सारे रास्तों को बंद कर दिया।
(6) इसके बाद उसके सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। सैंकड़ों लोग मारे गए। > जनरल डायर ने सत्याग्रहियों के मन में दहशत का भाव पैदा करने के लिए ऐसा किया।

असहयोग-खिलाफत आंदोलन की शुरुआत तथा आंदोलन का प्रभाव

सामाजिक प्रभावः-

(1) इसकी शुरुआत मध्य वर्ग से हुई ।
(2) विद्यार्थियों ने स्कूल कॉलेज छोड़ दिए ।
(3) हेड मास्टरों एवं शिक्षकों ने इस्तीफे दे दिए ।
(4) वकीलों ने मुकदमा लड़ना बंद कर दिया ।

आर्थिक प्रभावः-

(1) विदेशी सामान का बहिष्कार किया गया ।
(2) शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई ।
(3) विदेशी कपड़ों को भारी मात्रा में जला दिया गया ।

ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन

(1) गांवों में किसान बहुत दयनीय स्थिति में जीवन जी रहे थे। अंग्रेजी शासन में गांवों में जमीदारों ने किसानों पर बहुत अधिक कर लगा दिए थे।
(2) किसानों को उनके खेतों पर बिना वेतन के काम करना पड़ता था।
(3) पट्टेदारों के रूप में उनके पट्टे निश्चित नहीं होते थे। इसलिए उन्हें कभी भी पट्टे से हटा दिया जाता था।
(4) बाबा रामचंद्र जो पहले गिरमिटिया मजदूर के रूप में कार्य कर चुके थे, उन्होंने पंडित नेहरू के साथ मिलकर किसान सभा बनाई और गांवों में आंदोलन चलाया ।
(5) गांवों में किसानों ने जमीदारों की नाई धोबी सुविधा बंद करने का फैसला किया। > उन्होंने यह समझा कि इस आंदोलन का मतलब है कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और उन्हें उनकी जमीन वापस मिल जाएगी।
(6) इसलिए उन्होंने हिंसा का रास्ता अपनाया और जमीदारों के घर एवं अनाज भंडार लूट लिए ।

जंगलों में विद्रोह

(1) आदिवासी लोग अंग्रेजी सरकार द्वारा बड़े-बड़े जंगलों में दाखिल होने पर पाबंदी लगा देने से परेशान और क्रोधित थे।
(2) जब सरकार ने उन्हें सड़क निर्माण के लिए जबरन बेगार करने पर मजबूर किया तो उन्होंने बगावत कर दी।
(3) उनके नेता का नाम अल्लूरी सीताराम राजू था जो कि अपने आप को ईश्वर का अवतार बताता था।
(4) उसने लोगों को खादी पहनने और शराब छोड़ने के लिए प्रेरित किया क्योंकि वह गांधी जी के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित था।
(5) आदिवासियों ने इस आंदोलन का यह मतलब समझा कि पहले की तरह जंगल अब उनके अपने हैं, उन पर उन्हीं का ही अधिकार है।
(6) उसके नेतृत्व में आंध्र प्रदेश की गुड़ेम पहाड़ियों के गुड़ेम विद्रोहियों ने पुलिस थानों पर हमले किए, ब्रिटिश अफसरों को मारने का प्रयास किया एवं गुरिल्ला युद्ध चलाया। 1924 में अल्लूरी सीताराम राजू को फांसी दे दी गई।

बागानों में स्वराज

(1) 1859 के इनलैंड इमीग्रेशन एक्ट के तहत बागान मजदूरों को बागान से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी।
(2) मजदूरों के लिए आजादी का मतलब था कि वे उन चार दीवारों से जब चाहे आ जा सकते थे जिनमें उन्हें कैद करके रखा गया था।
(3) जब उन्होंने इस आंदोलन के बारे में सुना तो हजारों मजदूर अपने अफसरों के आदेश मानने से इनकार करने लगे।
(4) वे बागान छोड़कर अपने घर भागने लगे। उन्हें लगता था कि अब उन्हें गांव में अपनी जमीन मिल जाएगी।
(5) लेकिन वे अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाए। रेलवे और स्टीमरों की हड़ताल के कारण वे रास्ते में ही रह गए और अंग्रेजों द्वारा दोबारा पकड़े गए।

साइमन कमीशन का विरोध

(1) ब्रिटेन की नई सरकार ने भारत में संवैधानिक व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए और उसके बारे में सुझाव देने के लिए सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक आयोग बनाया।
(2) 1928 में जब साइमन कमीशन भारत पहुंचा तो उनका विरोध 'साइमन गो बैक' के नारे से हुआ क्योंकि इस कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था।

विभिन्न सामाजिक वर्गों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को कैसे लिया:-

संपन्न किसान:-

- व्यापारिक फसलों की खेती के कारण और व्यापार में मंदी व गिरती कीमतों से परेशान होकर जब उनकी नकद आए खत्म होने लगी तो उनके लिए सरकारी लगान चुकाना मुश्किल हो गया।
- इस भारी-भरकम लगान से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने गांधीजी के इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

गरीब किसान:-

- गरीब किसान लगान में कमी चाहते थे।
- उनमें से बहुत सारे किसान जो जमीदारों से पट्टे पर जमीन लेकर खेती करते थे, वे चाहते थे कि जमीन का किराया माफ कर दिया जाए क्योंकि महामंदी के कारण उनकी नकद आमदनी बिल्कुल खत्म होने लगी थी। इसलिए उन्होंने गांधीजी के इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

उद्योगपति

- आर्थिक महामंदी के दौरान भारतीय उद्योगपतियों का व्यापार चौपट होने लगा। > जब उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों की बुराइयां की तो उनके व्यापार पर अंकुश लगा दिया गया।

- वे चाहते थे कि विदेशी वस्तुओं पर अधिक शुल्क लगा दिया जाए जिससे उनके आयात में कमी आ जाए। इसलिए उन्होंने गांधीजी के इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

औद्योगिक मजदूरः-
- औद्योगिक मजदूरों ने काम वेतन खराब कार्य-स्थिति और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए स्वयं को इस आंदोलन से जोड़ लिया।

महिलाएंः-
- महिलाओं ने बहुत बड़ी संख्या में रैलियों में भाग लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार और शराब की दुकानों पर धरने दिए।
- कई महिलाएं इस आंदोलन के दौरान जेल भी गयीं।
- उन्हें लगता था कि इस आंदोलन के जरिए समाज में उनकी स्थिति अच्छी हो जाएगी। इसलिए उन्होंने इस आंदोलन में गांधीजी का साथ दिया।

पूना-पैक्ट (1932)

(1) 1930 तक कांग्रेस ने अछूतों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
(2) कांग्रेस ऊंची जाति वाले हिंदू सनातन पंथियों से डरी हुई थी।
(3) बहुत सारे दलित नेता अपने समुदाय की समस्याओं का अलग हल चाहते थे।
(4) डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने 1930 में दमित वर्ग एसोसिएशन बनाई और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में अलग चुनाव क्षेत्र की मांग की।
(5) सन 1932 में पूना पैक्ट में गांधी जी और डॉक्टर अंबेडकर के बीच आपसी सहमति से इस समस्या का हल निकाला गया।

सामूहिक अपनेपन का भाव

बीसवीं सदी में लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को विभिन्न माध्यमों के जरिए जागृत किया गया।
- चित्रः- अबनीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रसिद्ध भारत माता के चित्र की रचना की जिसमें भारत माता को एक देवी के रूप में दिखाया गया।
- गीतः- 1870 के दशक में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने मातृभूमि को समर्पित एक गीत वंदे मातरम लिखा। इसे बाद में उनके उपन्यास आनंदमठ में शामिल किया गया।
- तिरंगा झंडा :- 1921 तक गांधी जी ने भी स्वराज का एक झंडा तैयार कर लिया था। यह तिरंगा (सफेद हरा और लाल) था और इसके मध्य गांधीवादी प्रतीक चरखे को जगह दी गई थी। जुलूस में यह झंडा थामे चलना शासन के प्रति अवज्ञा का संकेत था।
- लोक कथाएं :- इतिहासकारों ने राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाने वाली लोक कथाओं और लोकगीतों को इकट्ठा किया जो हमारी संस्कृति की वास्तविक तस्वीरें पेश करती थीं।
- इतिहास की पुनर्व्याख्या: भारतीय इतिहासकारों ने अपने उस इतिहास के बारे में दोबारा से लिखा जब हमारा देश विभिन्न क्षेत्रों में विकास की चरम सीमा पर था। उन्होंने यह भी दिखाया कि गुलाम बनने के कारण हमारी इन उपलब्धियों का किस तरह से पतन हो गया है।

अल्लूरी सीताराम राजूः-

अल्लूरी सीताराम राजू एक आदिवासी नेता थे जिन्होंने पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासी लोगों को अंग्रेजी सरकार के अन्याय पूर्ण एवं अत्याचार पूर्ण व्यवहार के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने आदिवासियों को गांधी जी के नेतृत्व में शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने लोगों को खादी पहनने शराब छोड़ने और महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए कहा, परंतु उनका विश्वास था कि अंग्रेज केवल बल प्रयोग द्वारा ही भारत से निकाले जा सकते हैं। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पकड़कर 1924 में फांसी पर लटका दिया।

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में प्रथम विश्वयुद्ध का योगदान

(1) अत्यधिक मात्रा में आदमी तथा वस्तुओं की क्षति ने भारत में नई राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ पैदा कीं।
(2) युद्ध के दौरान गाँवों में रहने वाले लोगों को जबरन सेना में भर्ती किया गया तथा इनसे बेगार करवाया गया। इससे भारतीयों के बीच वृहत स्तर पर असंतोष फैला।
(3) युद्ध के कारण सरकार को हथियारों पर बहुत अधिक खर्च करना पड़ा।
(4) इसकी क्षतिपूर्ति के लिए सरकार ने कई करों को बढ़ा दिया तथा नए कर भी लगाए।
(5) इसी दौरान अपर्याप्त फसल के बावजूद सरकार की तरफ से न तो कोई मुआवजा दिया गया और न ही किसी तरह की आर्थिक सहायता दी गई। इस बात को लेकर लोगों में असंतोष पैदा हुआ।

"पृथक निर्वाचन पद्धति ने भारत विभाजन का मार्ग प्रशस्त किया।" व्याख्या कीजिए।

(1) पृथक निर्वाचन पद्धति से अभिप्राय यह है कि धर्म के आधार पर अपने ही धर्म के लोगों को वोट करना।
(2) पृथक निर्वाचन पद्धति अंग्रेजों द्वारा जानबूझकर भारतीय हिंदू और मुसलमानों में फूट डालने के लिए लागू की।
(3) अंग्रेज चाहते थे कि राष्ट्रीय आंदोलनों को मजबूती ना मिले।
(4) इस पद्धति के बाद से ही मुसलमानों ने अलग राज्य की मांग कर दी थी।

Ch 5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भारत में राष्ट्रवाद में मुद्रण का योगदान:-

1. दमनकारी नीति के बावजूद राष्ट्रवादी अखबार देश के हर कोने मे बढ़ते फैलते गए।
2. उन्होंने औपनिवेशिक कुशासन के बारे में लिखा ।
3. पंजाब के क्रांतिकारियों को गिरतार किया गया तो बाल गंगाधर तिलक ने अपना केसरी समाचार छापा तथा लोगों ने गहरी हमदर्दी जताई।
4. पंजाब तथा देश के अन्य भागों में राष्ट्रवादी आंदोलन को बल मिला।
5. इस कारण बाल गंगाधनर तिलक को कैद कर लिया गया जिसका पूरे भारत मे विरोध हुआ।

मुद्रण का महिलाओं पर प्रभाव :-

(1) मुद्रण संस्कृति के विकसित होने से किताबों में महिलाओं की जीवन, उनकी समस्याएं और उनकी भावनाओं के बारे में बहुत कुछ लिखा जाने लगा। धीरे धीरे परिवार के विभिन्न सदस्य महिलाओं को पढ़ाने लिखाने लगे ।
(2) कैलाशबशिनी देवी जैसी लेखिकाओं ने जब महिलाओं के लिए लेख लिखना शुरू किया और उनके अधिकार के बारे में बताया जिसे पढ़कर महिलाओं को अपने स्थिति का पता चला।
(3) जब महिलाँए पढ़ना लिखना सिख लिया तो वे रोजगार की माँग करने लगी।

भूगोल

Ch 4: कृषि

शस्य प्रारूप (CROPPING PATTERN):-

- **रबी**: (अक्टूबर-दिसम्बर__मार्च-जून) गेहूं, जौ, मटर, सरसों, चना।
- **खरीफ**: (जून-जुलाई__सितम्बर-अक्टूबर) चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, ग्वार, कपास, मूंग, अरहर, सोयाबीन, उड़द, जूट, मूंगफली
- **जायद**: तरबूज, खरबूजे, खीरा, ककड़ी, सब्जियां, बरसम

फसलों के प्रकार (Types of Crops)

- **खाद्यान्न फसलें**: गेहूं, चावल, मक्का, बाजरा, जौ।
- **दलहन फसलें:** मूंग, अरहर, चना, उड़द, मसूर, मटर।
- **तिलहन फसलें**: मूंगफली, सरसों, सोयाबीन, तिल, सूरजमुखी, नारियल, अलसी, अरंडी।
- **बागवानी फसलें**: आम, केला, अनार, अमरुद, संतरे, कीनू, सेब अन्य फल
- **रेशेदार फसलें:** कपास, जूट, पटसन, रेशम।
- **पेय फसलें:** चाय, कॉफी, कहवा।

Ch 5: खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

परंपरागत तथा गैर परंपरागत ऊर्जा संसाधन में अंतर

परंपरागत ऊर्जा संसाधन	गैर परंपरागत ऊर्जा संसाधन
1.जिन ऊर्जा स्रोतों का उपयोग मनुष्य लंबे समय से करता चला आ रहा है, परंपरागत ऊर्जा संसाधन होते हैं। 2.इन स्रोतों के सीमित भंडार है। 3.ये अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत हैं। 4.इन ऊर्जा संसाधनों के प्रयोग से प्रदूषण होता है।	1.परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के विकल्प के रूप में मनुष्य नये नये ऊर्जा के स्त्रोत ढूंढ रहा है वे गैर परंपरागत ऊर्जा संसाधन हैं। 2.इन स्रोतों का असीमित भंडार है । 3. ये नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत हैं। 4.इन ऊर्जा स्रोतों के उपयोग से प्रदूषण नहीं फैलता है।

खनिजों के संरक्षण

हमें खनिजों के संरक्षण की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि

1. हमारी भू पर्पटी का एक प्रतिशत हिस्सा ही खनिज के रूप में है।
2. इन खनिज संसाधनों के निर्माण में लाखो वर्ष लग जाते है।
3. इस प्रकार ये खनिज संसाधन सीमित तथा अनवीकरण योग्य है।
4. लगातार खनन करने से उसकी लागत बढ़ जाती है क्योंकि गहराई बढ़ने से उसको निकालने में ज्यादा खर्च करना पड़ता है।
5. इसके लिए खनिजों का सुनियोजित एवं सतत् पोषणीय ढंग से प्रयोग करना होगा।

खनिज एवं प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक विकास में महत्व

खनिज और प्राकृतिक संसाधन किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. औद्योगिक विकास: कोयला, पेट्रोलियम और लौह अयस्क जैसे खनिज उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करते हैं।
2. ऊर्जा उत्पादन: ऊर्जा उत्पादन के लिए कोयला, तेल और गैस जरूरी हैं।
3. रोजगार: खनन और संबंधित उद्योग रोजगार के बड़े अवसर प्रदान करते हैं।
4. विदेशी मुद्रा: खनिजों का निर्यात राजस्व और विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
5. बुनियादी ढांचा: सड़क, पुल, और रेलवे निर्माण में खनिज उपयोगी हैं।
6. क्षेत्रीय विकास: खनन पिछड़े क्षेत्रों का विकास करता है।
7. सामरिक उपयोग: कुछ खनिज रक्षा और ऊर्जा सुरक्षा के लिए जरूरी हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की रणनीतियाँ

प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं:

1. संसाधनों का कुशल उपयोग: ऊर्जा और कच्चे माल की बर्बादी रोकें।
2. नवीकरणीय ऊर्जा: सौर, पवन और जल ऊर्जा का अधिक उपयोग करें।
3. पुनर्चक्रण: प्लास्टिक, धातु और कागज को दोबारा उपयोग करें।
4. वृक्षारोपण: वनों की रक्षा करें और अधिक पेड़ लगाएं।
5. जागरूकता: लोगों को संसाधन बचाने के महत्व के बारे में सिखाएं।
6. कड़े कानून: अनियमित खनन और संसाधन दोहन रोकने के लिए नियम बनाएं।

निष्कर्ष: इन उपायों से संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित कर पर्यावरण और भविष्य को बचाया जा सकता है।

Ch 6: विनिर्माण उद्योग

विनिर्माण:-कच्चे पदार्थ को मूल्यवान उत्पाद में परिवर्तित कर, अधिक मात्रा में उत्पादन करने को विनिर्माण कहते हैं। जैसे- लौह अयस्क से लोहा और इस्पात, बॉक्साइट से एल्यूमीनियम।

विनिर्माण उद्योगों का महत्व:-

1) कृषि आधुनिकीकरण में सहायक।
2) रोजगार उपलब्ध करवाना।
3) क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना ।
4) विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक।
5) बेरोजगारी और गरीबी को कम करने में सहायक
6) देश के आर्थिक विकास में योगदान।

औद्योगिक स्थिति को प्रभावित करने वाले तत्व

1) कच्चे माल की उपलब्धता
2) अनुकूल जलवायु
3) ऊर्जा के साधन
4) पूंजी
5) कुशल श्रमिकों की उपलब्धता
6) बाजार

उद्योगों का वर्गीकरण:-

कच्चे माल के आधार पर

1) **कृषि आधारित** सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, पटसन, रेशम वस्त्र, रबर, चीनी, चाय, काफी तथा वनस्पति तेल उद्योग।
2) **खनिज आधारित** लोहा तथा इस्पात, सीमेंट, एल्यूमिनियम, मशीन, औजार तथा पेट्रोरासायन उद्योग।

प्रमुख भूमिका के आधार पर

1. **आधारभूत उद्योग** जिनके उत्पादन या कच्चे माल पर दूसरे उद्योग निर्भर हैं जैसे-लोहा इस्पात, ताँबा प्रगलन व एल्यूमिनियम प्रगलन उद्योग।
2. **उपभोक्ता उद्योग** जो उत्पादन उपभोक्ताओं के सीधे उपयोग हेतु करते हैं जैसे चीनी, दंतमंजन, कागज, पंखे, सिलाई मशीन आदि।

स्वामित्व के आधार पर -

1. **सार्वजनिक क्षेत्र:** इनका स्वामित्व, नियंत्रण एवं प्रबंधन सरकारी एजेंसियों द्वारा होता है। जैसे भारत हैवी इलैक्ट्रिकल लिमिटेड (BHEL) तथा स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL) आदि।
2. **निजी क्षेत्र:** इनका स्वामित्व और संचालन एक व्यक्ति या समूह के पास होता है। रिलायंस, बजाज ऑटो, डाबर उद्योग आदि।
3. **संयुक्त उद्योग:** ऐसे उद्योग जो सरकार और निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयास से चलाये जाते हैं। जैसे ऑयल इंडिया लिमिटेड (OIL)
4. **सहकारी उद्योग:** जिनका स्वामित्व कच्चे माल की पूर्ति करने वाले उत्पादकों, श्रमिकों या दोनों के हाथों में होता है। संसाधनों का कोष संयुक्त होता है तथा लाभ-हानि का विभाजन भी अनुपातिक होता है जैसे - महाराष्ट्र के चीनी उद्योग, केरल के नारियल पर आधारित उद्योग।

कच्चे तथा तैयार माल की मात्रा व भार के आधार पर

1. **भारी उद्योग** जैसे लोहा तथा इस्पात आदि।
2. **हल्के उद्योग** जो कम भार वाले कच्चे माल का प्रयोग कर हल्के तैयार माल का उत्पादन करते हैं जैसे - विद्‌युतीय उद्योग।

उद्योगों का पर्यावरण पर प्रभाव
उद्योग चार प्रकार के प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है।

1) वायु प्रदूषण
2) जल प्रदूषण
3) तापीय प्रदूषण
4) ध्वनि प्रदूषण।

उद्योगों के कारण पर्यावरणीय निम्नीकरण की रोकथाम हेतु सुझाव
1) विभिन्न प्रक्रियाओं में जल का न्यूनतम उपयोग।
2) जल को दो या दो अधिक उत्तरोत्तर अवस्थाओं में पुनर्चक्रण ।
3) वर्षा जल संचयन ।
4) नदियों व तालाबों में गर्म जल तथा अपशिष्ट पदार्थों को प्रवाहित करने से पहले उनका शोधन करना। जैसे:-

(I) यांत्रिक क्रियाओं द्वारा प्रथम शोधन ।
(II) जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीय शोधन।
(III) जैविक रासायनिक तथा भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा तृतीय शोधन।

कच्चे माल की उपलब्धता और उद्योगों की अवस्थिति के बीच संबंध:-
कच्चे माल की उपलब्धता और उद्योग के स्थान के बीच गहरा संबंध है। इसके मुख्य बिंदु:
1. भारी कच्चे माल: ऐसे कच्चे माल, जो भारी होते हैं (जैसे खनिज और कोयला), उन्हें पास के उद्योग में उपयोग करना आसान होता है।
2. खराब होने वाले कच्चे माल: चीनी उद्योग जैसे उद्योग गन्ने के खेतों के पास स्थापित होते हैं क्योंकि गन्ना जल्दी खराब हो जाता है।
3. परिवहन लागत: कच्चा माल जितना पास होगा, परिवहन लागत उतनी कम होगी। उदाहरण: सीमेंट और इस्पात उद्योग।
4. ऊर्जा स्रोत: कोयला खदानों के पास ऊर्जा-आधारित उद्योग लगाए जाते हैं।
5. स्थानीय संसाधन: हस्तशिल्प और कृषि आधारित उद्योग स्थानीय कच्चे माल पर निर्भर करते हैं।
निष्कर्ष: कच्चे माल की उपलब्धता से उद्योग का स्थान तय होता है, लेकिन परिवहन, ऊर्जा और तकनीक भी अहम भूमिका निभाते हैं।

Ch 4: राजनीतिक दल

राजनीतिक दल का अर्थ:

एक ऐसा संगठित समूह जो चुनाव लड़ने और राजनीतिक सता प्राप्त करने के उद्देश्य से काम करता है राजनीतिक दल कहलाता है। राजनीतिक दल के तीन हिस्से या घटक होते हैं नेता, सक्रिय सदस्य, और समर्थक

राजनीतिक दलों के कार्य :

1. चुनाव लड़ना ।
2. सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों को जनता के सामने लाना।
3. कानून निर्माण में सहायता करना ।
4. चुनाव हारने पर शासक दल के विरोधी पक्ष की भूमिका निभाना ।
5. जनमत निर्माण में दल मुद्दों को उठाते हैं और उस पर बहस करते हैं।

राजनीतिक दलों की आवश्यकता :

1) लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है।
2) सरकार की नीतियों पर अंकुश लगाते हैं।
3) लोगों की समस्याओं को सरकार तक पहुंचाते हैं।.

दलीय प्रणाली
विश्व में तीन प्रकार की दलीय प्रणाली है
1. एक दलीय प्रणाली या व्यवस्था:- इसमें देश की सत्ता एक ही दल के पास होती है जैसे चीन
2. दो दलीय व्यवस्था:- कई देशों में सत्ता दो ही दलों के बीच होती है जैसे- अमेरिका और ब्रिटेन
3. बहुदलीय व्यवस्था:- ऐसे देश जहां बहुत से दलों को सत्ता में आने का अवसर मिलता है जैसे भारत

कौन सी दलीय व्यवस्था बेहतर है:
बहुदलीय प्रणाली को बेहतर माना जाता है क्योंकि चुनाव के समय लोगों के सामने बहुत से विकल्प होते हैं। बहुत सारे दल चुनाव लड़ते हैं।

राजनैतिक दलों की चुनौतियां
1. वंशवाद की चुनौती
2. आंतरिक लोकतंत्र की कमी
3. बढ़ती हुई पैसे की भूमिका
4. अपराधिक तत्वों की घुसपैठ
5. विकल्प हीनता
6. दलबदल की चुनौती

राजनीतिक दलों में सुधार हेतु सुझाव:
1. दल बदल कानून को सख्त किया जाए ।
2. अपराधियों को पार्टी में ना लिया जाए।
3. महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें रखी जाए।
4. राजनीतिक दलों में समय-समय पर चुनाव हो।
5. राजनीतिक दलों के काम को पारदर्शी बनाया जाए।

Ch 5: लोकतंत्र के परिणाम

लोकतंत्र की विशेषताएं, गुण, लाभ, आवश्यकता, पक्ष, परिणाम:-
1. लोकतंत्र नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है
2. लोकतंत्र व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।
3. लोकतंत्र से फैसलों में बेहतरी आती है।
4. लोकतंत्र में गलतियों को सुधारने की संभावना होती है।
5. लोकतंत्र टकराव को टालने और संभालने का तरीका देता है।
6. लोकतंत्र एक उत्तरदाई जिम्मेदार और वैध शासन व्यवस्था है। लोकतंत्र में नागरिकों को आर्थिक शोषण से बचाया जाता है। जनहित में अनेक योजनाएं चलाई जाती हैं।

लोकतंत्र की खामियां -
1. आर्थिक विकास की दर धीमी होती है।
2. लोकतंत्र में फैसले लेने में बहुत देर लगती है।
3. सरकार में भ्रष्टाचार व्याप्त रहता है।
4. लोकतंत्र के अंदर जनहित के चक्कर में नागरिकों पर कोई दबाव नहीं डाला जाता अतः जनसंख्या वृद्धि बेरोजगारी और आर्थिक विकास में कमी देखने को मिलती है।
5. कानून के समक्ष सब सामान होते हैं इसके बावजूद भी लोगों में भेदभाव निहित रहता है।

'शिकायतों का बना रहना लोकतंत्र की सफलता की गवाही है।' इस कथन को न्यायसंगत ठहराइए।

1. लोकतंत्र की एक खासियत है कि इसकी जाँच-परख और परीक्षा कभी खत्म नहीं होती।
2. लोगों को लोकतंत्र से जब थोड़ा लाभ मिल जाता है तो वे और लाभों की माँग करने लगते हैं और वे लोकतंत्र से और अच्छा काम चाहते हैं।
3. शिकायतों का बने रहना लोकतंत्र की सफलता की गवाही देता है। इससे पता चलता है कि लोग सचेत हो गए हैं और वे सत्ता में बैठे लोगों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने लगे हैं।
4. लोकतंत्र के कामकाज से लोगों का असंतोष जताना लोकतंत्र की सफलता तो बताता ही है, साथ ही यह लोगों के प्रजा से नागरिक बनने की गवाही भी देता है।
5. आज अधिकांश लोग मानते हैं कि सरकार की चाल-ढाल पर उनके वोट से असर पड़ता है और यह उनके अपने हितों को भी प्रभावित करता है।

अर्थशास्त्र

Ch 3: मुद्रा एवं साख

1. वस्तु विनिमयः- वस्तु के बदले वस्तुओं का लेन देन वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है।

2. आवश्यक्ताओं का दोहरा संयोगः जब एक व्यक्ति किसी वस्तु को बेचने की इच्छा रखता हो और वही वस्तु दूसरा व्यक्ति भी खरीदने की इच्छा रखता हो तो इसे आवश्यक्ताओं का दोहरा संयोग कहते हैं।

3. मुद्राः- आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कठिनाई को दूर करने के लिये मुद्रा का आविष्कार हुआ।

4. मुद्रा के आधुनिक रूपः नोट, सिक्के, चेक, डेबिट कार्ड, यू पी आई, मोबाइल व नेट बैंकिंग, आदि।

5. बैंकों के कार्य:-

1. अतिरिक्त जमा स्वीकार करना
2. साख (उधार) उपलब्ध करवाना
3. जमाओं पर ब्याज देना
4. मांग जमा- बैंक खाते मे से खाताधारक द्वारा जमा धन को मांग के जरिए निकालने को मांग जमा कहते हैं।

6. रिजर्व बैंक के कार्य:-

1. मुद्रा जारी करना
2. ब्याज दरें निर्धारित करना।
3. बैंकों की कुछ राशि का नकद संचयन
4. बैंकों की कार्य प्रणाली पर नजर रखना
5. सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंक किसान, गरीब लोगो को साख की सुविधाएँ उपलब्ध कराए

7. ऋण के स्रोत:-

औपचारिक ऋण स्रोत	अनौपचारिक ऋण स्रोत
बैंक, सहकारी समितिया	साहूकार, जमींदार, मित्र, व्यापारी, रिश्तेदार, आदि।
पूर्व निश्चित व कम ब्याज दर	अनिश्चित व अधिक ब्याज दर
निम्न ब्याज दर से उधार लेने वाले की आय में वृध्दि	अधिक ब्याज दर से ऋण की राशि मे अधिक वृध्दि व ऋणी का ऋण जाल मे फसना।

8. समर्थक ऋणाधार (गिरवी): उधार देने से पूर्व उधार देने वाला व्यक्ति या संस्था उधार लेने वाले से उन परिसंपत्तियों की मांग करता हैं जिन्हे बेचकर वह अपने ऋण की राशि वसूल कर सके। उदाहरण-कृषि योग्य भूमि, मकान, दुकान, जेवर आदि।

9. ऋण की शर्तें:- ब्याज दर, समर्थक ऋणाधार, आवश्यक दस्तावेज, भुगतान प्रक्रिया, ई एम आई (EMI), आदि को सामूहिक रुप से ऋण की शर्ते कहते हैं। ऋण की शर्तें पूरी ना करने पर गरीब परिवार, किसान आदि को इधर-उधर से ऋण लेना पड़ता है।

10. ऋण के प्रकार: आवास ऋण, शिक्षा ऋण, कार ऋण, आदि। 10. ऋण की आवश्यकताएं:- बीज, खाद आदि के लिये किसान द्वारा ऋण, मकान, शिक्षा, व्यापार आदि।

11. साख जालः जब कोई व्यक्ति उधार लेता है और समय पर उसका भुगतान नही कर पाता उसकी उधार राशि ब्याज के साथ बढ़ती जाती है और पहले ऋण को चुकाने के लिये नया ऋण लेता है तो इसे साख जाल कहते हैं।

12. स्वयं सहायता समूहः- ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों विशेषकर महिलाओं के छोटे-छोटे सहायता समूह जिनमें सदस्यों की संख्या 15-20 तक होती है। अपनी छोटी-छोटी बचतें एकत्र करतें हैं।

लाभ या उद्देश्य:-

1) यह ग्रामीण गरीबों, विशेषकर महिलाओं को छोटे सहायता समूहों में संगठित करता है।
2) यह सदस्यों की बचत जमा करता है।
3) यह बिना संपार्श्विक के ऋण प्रदान करता है।
4) यह विभिन्न उद्देश्यों के लिए समय पर ऋण प्रदान करता है।
5) यह उचित ब्याज दर और आसान शर्तों पर ऋण प्रदान करता है।
6) यह शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा आदि जैसे विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने और कार्य करने के लिए एक मंच भी प्रदान करता है।

Ch 4: वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण:- विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते हैं।

उदारीकरण:- सरकार द्वारा विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए व्यापार अवरोधक और प्रतिबंध को हटाना उदारीकरण कहलाता है

व्यापार अवरोधक:- विदेशी व्यापार को देश में कम करने के लिए प्रतिबन्ध लगाए जाते है जैसे आयात कर, आयात कोटा, लाइसेंस वह व्यापार अवरोधक कहलाता है।

वैश्वीकरण को संभव करने वाले कारक
1) व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण
2) विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का सहयोग
3) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विभिन्न देशों में अपनी इकाइयाँ स्थापित करना आदि,
4) परिवहन प्रोधोगिकी में बहुत उन्नती
5) सूचना प्रोद्योगिकी के विकास

वैश्वीकरण के लाभ
1. उपभोक्ताओं को कम कीमत पर अधिक गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं की उपलब्धता
2. उच्चतम जीवन स्तर का लाभ
3. सेलफोन मोटरगाड़ी जंकफूड इलैक्ट्रानिक उद्योग मे शहरी क्षेत्र के लोगों के लिए रोजगार के अवसर
4. भारतीय कम्पनियों का बहुराष्ट्रीय कम्पनी के रूप में उभरना जैसे टाटा मोटर्स, इन्फोसिस
5. शीर्ष भारतीय कम्पनियों द्वारा नवीनतम प्रोधोगिकी में निवेश

वैश्वीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी के योगदान
प्रौद्योगिकी का ही यह कमाल है कि उसने देखते ही देखते विश्व को एक इकाई बनाकर रख दिया है और वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया है।
1. परिवहन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले 50 वर्षों में होने वाली उन्नति ने जहाँ लंबी दूरियाँ कम की हैं वहाँ माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाना ले जाना काफी आसान कर दिया है।
2. प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति ने विभिन्न कम्पनियों को इस योग्य बना दिया है कि वे अपनी वस्तुओं को बड़े-बड़े कंटेनरों में रखकर विदेशों में भेज सकें। ऐसा करने से न केवल ढुलाई लागत में बचत हुई है वरन् माल के बाजारों में पहुँचाने की गति में भी तीव्रता आई है।
3. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का विकास इससे भी अधिक उल्लेखनीय है। दूरसंचार, कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स आदि ने विश्व भर में एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने, सूचनाएँ तत्काल प्राप्त करने, दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद स्थापित करना बड़ा सुगम बना दिया है। अब हम संसार भर में कम मूल्यों पर बातचीत कर सकते हैं।
4. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने एक और प्रकार से भी वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया है इन्होंने विभिन्न देशों के बीच सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब लंदन या न्यूयार्क के पाठकों के लिए समाचार पत्रिकाओं की डिज़ाइनिंग और छपाई दिल्ली में की जाती है।
5. अब इंटरनेट द्वारा पेरिस में स्थित एक बैंक और दिल्ली में स्थित बैंक में आपसी लेन-देन तत्काल हो जाता है।

निःसंदेह प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित किया है।